डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि ***श्री. पंडित गेनप्पा बन्ने*** द्वारा लिखित *''उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ''* यह लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - **29 AUG 2001**

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. इरेश स्वामी
एम्.ए., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
स्नातक तथा स्नातकोत्तर, हिंदी विभाग,
संगमेश्वर महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि ***श्री. पंडित गेनप्पा बन्ने*** ने मेरे निर्देशन में ***''उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ''*** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व नियोजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध से प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान :- कोल्हापुर।
तिथि :- 23/8/2001

शोध-निर्देशक
23.06.09
(डॉ. इरेश सदाशिव स्वामी)

प्रख्यापन

''उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ'' यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 23/8/2001

शोध-छात्र

(श्री. पंडित गेनप्पा बन्ने)

१९६५ में संगीत नाटक अकादमी द्वारा हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ
नाटककार के रूप में पुरस्कृत अश्क, श्रीमती इन्दिरा गान्धी
के साथ पुरस्कार वितरण के बाद ।

प्राक्कथन

प्राक्कथन

उपेंद्रनाथ 'अश्क' जी समाज की यथार्थता से जुड़े हुए प्रतिभा संपन्न लेखक हैं। अश्क जी की एकांकियों में चित्रित यथार्थ चित्रण ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। उनके 'सूखी डाली' एकांकी पढ़ते ही मुझे मध्यवर्गीय समाज और उनकी परिवार विघटन की समस्याओं ने प्रभावित किया। मैंने परिवार विघटन की समस्या को ध्यान में रखते हुए उनके सामाजिक एकांकियों के परिप्रेक्ष्य में शोध-कार्य करने का निश्चय किया। विषय निश्चिति के पहले प्रस्तुत विषय के संदर्भ में आदरणीय गुरुवर्य डॉ. इरेश स्वामी जी से विचार विमर्श किया और उन्होंने मुझे प्रस्तुत विषय की निश्चिति के लिए प्रोत्साहित किया।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खड़े हुए थे -

1. उपेंद्रनाथ 'अश्क' जी का जीवन किस तरह बीता ?
2. क्या उनके एकांकियों में समस्याएँ दिखाई देती हैं ?
3. समस्या : अर्थ, परिभाषा, मीमांसा क्या है ?
4. उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में समस्याएँ किस प्रकार की हैं ?
5. उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों की साहित्यिक दृष्टि से विशेषताएँ किस प्रकार की हैं ?

अध्ययन के उपरांत इन प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है।

पहला अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय के अंतर्गत 'अश्क' जी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं का संक्षिप्त रूप में परिचय दिया गया है। इसके साथ 'अश्क' जी की समीक्षक दृष्टि का भी विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज हैं।

दूसरा अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों का संक्षिप्त परिचय

इस अध्याय के अंतर्गत पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ, चरवाहे, मैमूना, चुंबक, चिलमन, सूखी डाली, तौलिए, पापी, आपस का समझौता, तूफान से पहले, जोंक, देवताओं की छाया में, सयाना मालिक, मस्केबाजों का स्वर्ग, अधिकार का रक्षक, कइसा साहब ! कइसी आया, फादर्ज, किसकी बात, अंधी गली, चमत्कार, पक्का गाना आदि एकांकियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

तीसरा अध्याय - समस्या : अर्थ, परिभाषा, मीमांसा

इसके अंतर्गत समस्या शब्द का अर्थ, समस्या की परिभाषा, समस्या : स्वरूप, व्याप्ति, समस्या और साहित्य, समस्या साहित्य की अनिवार्यता, समस्या के प्रकार - आध्यात्मिक समस्या, भौतिक समस्या - पारिवारिक, नारी, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, लोकसंख्या, सांस्कृतिक आदि समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

चौथा अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ

इस अध्याय में सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

पाँचवाँ अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों की साहित्यिक दृष्टि से विशेषताएँ

इस अध्याय में कथावस्तु, पात्र-चरित्र चित्रण, अभिनेयता, देशकाल वातावरण, शैली, उद्देश्य, संकलन-त्रय आदि विशेषताओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। तत्पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. इरेश स्वामी जी (हिंदी विभागाध्यक्ष संगमेश्वर महाविद्यालय, सोलापुर) के आत्मीय प्रेरक, छात्रप्रिय एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के निर्देशन का फल है। अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। मैं आप में निरंतर गुरु का पूर्णत्व रूप देखता हूँ। बस, यही कहूँगा कि आपके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगा और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन की कामना करता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी और शिवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पांडुरंग पाटील जी से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में प्रोत्साहन मिलता रहा। मैं उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य समझता हूँ।

आदरणीय डॉ. सौ. आशा मणियार, डॉ. बाबासाहेब पोवार, डॉ. मारूती शिंदे (हिंदी विभागाध्यक्ष, वालचंद महाविद्यालय, सोलापुर), प्रा. भारत खिलारे, प्रा. लालासाहेब घोरपड़े, प्रा. एल. आर. पाटील, प्रा. सुनिल बनसोडे आदि का इस शोध-कार्य के बारे में मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा। अतः इन सभी का मैं ऋणी हूँ।

मेरे अध्ययन तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठानेवाले मेरे पूज्य माता-पिता, भाई-बहन आदि के आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे हैं। अतः मैं आप सभी का ऋणी हूँ।

मेरे स्नेही हित चिंतक मित्र साताप्पा चव्हाण, भाऊसाहेब नवले, गिरीश काशिद, अशोक बाचूळकर, प्रकाश शेटे, मनोहर भंडारी, मलय्या हिरेमठ, बाळू दास, राजेंद्र जाधवर, शिवानंद जोकारे, पंडित साबा, सिद्धाराम म्हेत्रे, भास्कर भवर, अमोल कासार, सुरेश शिंदे, सुरेश वाघमोडे, उत्तम थोरात और एम्. फिल के सहपाठी मित्र इन सभी के सहायता हेतु मैं इन सभी का तहेदिल से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, संगमेश्वर महाविद्यालय, सोलापुर, वालचंद महाविद्यालय, सोलापुर से हुई। अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का सुंदर एवं सुचारू रूप से टंकन करनेवाले अल्ताफ मोनीन का भी मैं अभारी हूँ।

अत: मैं उन ज्ञान अज्ञात व्यक्ति जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग हुआ उन सबके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. पंडित बन्ने)

स्थान - कोल्हापुर।

तिथि - 23/8/2001

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पहला अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. 1 - 19

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 विवाह

1.1.5 जीवन संघर्ष

1.1.6 सेहतमंद मरीज

1.1.7 आकाशवाणी एवं चलचित्र जगत में

1.1.8 मृत्यु

1.1.9 व्यक्तित्व

1.2 कृतित्व

1.2.1 नाटक

1.2.2 एकांकी

1.2.3 उपन्यास

1.2.4 कहानी

1.2.5 काव्य

1.2.6 संस्मरण, जीवनी, लेख

1.2.7 अनुवाद

1.2.8 संपादक, संकलन

1.2.9 आलोचना

1.2.10 अश्क के जीवन का साहित्य से संबंध

निष्कर्ष

दूसरा अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों का संक्षिप्त परिचय
पृ. 20 - 36

2.1 पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ

2.2 चरवाहे

2.3 मैमूना

2.4 चुंबक

2.5 चिलमन

2.6 सूखी डाली

2.7 तौलिए

2.8 पापी

2.9 आपस का समझौता

2.10 तूफान से पहले

2.11 जोंक

2.12 देवताओं की छाया में

2.13 सयाना मालिक

2.14 मस्के बाजों का स्वर्ग

2.15 अधिकार का रक्षक

2.16 कइसा साहब ! कइसा आया

2.17 फादर्ज

2.18 किसकी बात

2.19 अंधी गली

2.20 चमत्कार

2.21 पक्का गाना

निष्कर्ष

तीसरा अध्याय - समस्या : अर्थ, परिभाषा, मीमांसा पृ. 37 - 56

3.1 ***समस्या शब्द का अर्थ***

3.2 ***समस्या की परिभाषा***

3.3 ***समस्या का स्वरूप, व्याप्ति***

3.4 ***समस्या और साहित्य***

3.5 ***समस्या साहित्य की अनिवार्यता***

3.6 ***समस्या के प्रकार***

3.6.1 अध्यात्मिक

3.6.2 भौतिक

3.6.2.1 पारिवारिक

3.6.2.2 नारी

3.6.2.3 सामाजिक

3.6.2.4 आर्थिक

3.6.2.5 राजनीतिक

3.6.2.6 धार्मिक

3.6.2.7 लोकसंख्या

3.6.2.8 सांस्कृतिक

निष्कर्ष

चौथा अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ पृ. 57 - 92

4.1 ***सामाजिक समस्या***

4.1.1 समाज : परिभाषा, स्वरूप

4.1.2 वर्ग

4.1.2.1 उच्च वर्ग

4.1.2.2 मध्य वर्ग

4.1.2.3 निम्न वर्ग

4.1.3 घरेलू नौकर

4.1.4 सिनेमा जगत

4.1.5 शरणार्थी

4.1.6 आज की शिक्षा पद्धति

4.1.7 परिवार विघटन

4.1.8 राजनीतिक

4.1.9 शहरों का आकर्षण

4.1.10 गली-मोहल्ले के झगड़े

4.1.11 राष्ट्रभाषा

4.1.12 अध्यापकों की अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता

4.1.13 सांप्रदायिकता

4.1.14 वैवाहिक जीवन

4.1.15 अंध:विश्वास

4.1.16 पारिवारिक सदस्यों के परस्पर संबंध

4.1.17 प्रेम

4.1.18 मेहमान

4.2 आर्थिक समस्या

4.2.1 बेकारी

4.2.2 मजदूर

4.2.3 रिश्वतखोरी

4.2.4 महँगाई

4.3 मनोविज्ञान की समस्या

4.3.1 साहित्य और मनोविज्ञान

4.3.2 मनोविज्ञान की उपयोगिता

4.3.3 मनोविज्ञान व्यवहार विज्ञान

4.3.4 आधुनिक मनोविज्ञान

4.3.5 वासना

4.3.6 वेश्या

4.3.7 सेक्स

4.3.8 महत्त्वाकांक्षा

4.3.9 सनक

निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों की साहित्यिक दृष्टि से विशेषताएँ पृ. 93 - 123

5.1 *कथावस्तु*

5.2 *पात्र एवं चरित्र-चित्रण*

5.3 *संवाद और भाषा*

5.4 *अभिनेयता*

5.5 *देशकाल वातावरण*

5.6 *शैली*

5.7 *उद्‌देश्य*

5.8 *संकलन-त्रय*

5.8.1 काल संकलन

5.8.2 कार्य संकलन

5.8.3 स्थान संकलन

निष्कर्ष

उपसंहार पृ. 124 - 136

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ. 137 - 140